

Shri Mahakali Puja

Date : 1st April 1986
Place : Kolkata
Type : Puja
Speech : Hindi
Language

CONTENTS

I Transcript

Hindi	02 - 06
English	-
Marathi	-

II Translation

English	07 - 10
Hindi	-
Marathi	-

ORIGINAL TRANSCRIPT

HINDI TALK

२१ मार्च से हमारा जन्मदिवस आप लोग मना रहे हैं और बम्बई में भी बड़ी जोर-शोर से चार दिन तक जन्म दिवस मनाया गया और इसके बाद दिल्ली में जनम दिवस मनाया गया और आज भी लग रहा है फिर आप लोग हमारा जन्म दिवस मनाते रहे। इस कदर सुंदर सजाया हुआ है इस मंडप को, फूलों से और विविध रंगों से सारी शोभा इतनी बढ़ाई हुई है कि शब्द रुक जाते हैं, कलाकारों को देख कर कि उन्होंने किस तरह से अपने हृदय से यहाँ यह प्रतिभावान चीज़ बनाई इतने थोड़ी समय में। आज विशेष स्वरूप ऐसा है कि अधिकतर इन दिनों में जब कि ईस्टर होता है मैं लंदन में रहती हूँ और हर ईस्टर की पूजा लंदन में ही होती है। तो उन लोगों ने यह खबर की, कि माँ कोई बात नहीं आप कहीं भी रहें जहाँ भी आपकी पूजा होगी वहाँ हमें याद कर लीजिएगा और हम यहाँ ईस्टर की पूजा करेंगे उस दिन। इतने जल्दी में पूजा का सारा इन्तजाम हुआ और इतनी सुंदरता से, यह सब परमात्मा की असीम कृपा है जो उन्होंने ऐसी व्यवस्था करवा दी। लेकिन यहाँ एक बड़ा कार्य आज से आरंभ हो रहा है।

आज तक मैंने अगुरुओं के विषय के बारे में बहुत कुछ कहा और बहुत खुले तरीके से मैंने इनके बारे में बताया; ये कितने दुष्ट हैं, कितने राक्षसी हैं और किस तरीके से ये सच्चे साधकों का रास्ता रोकते हैं और उनको गलतफहमी में डाल के उनको एकदम उल्टे रास्ते पर डाल देते हैं और इसके लिए बहुत लोगों ने जताया कि ऐसी बात करना ठीक नहीं इससे गुरु लोग आप पर आक्रमण करेंगे और आपको सताएंगे लेकिन हुआ उसके बिलकुल उल्टा किसी ने भी हमें कचहरी नहीं दिखाई, ना ही किसी ने हमारे बारे में बात कही, एक-एक करके हर एक दुष्ट सामने आया और दुनिया ने जाना कि जो कुछ हमने इनके बारे में कहा था वह बिलकुल सत्य है, आज धीरे-धीरे ये अगुरु मिट रहे हैं। लेकिन तांत्रिक अभी भी काफी अपना जोर बँधाये हुए हैं और आपके कलकत्ते में इसका मेरे खयाल से मुख्य स्रोत है। यहाँ पर वह पनपते हैं और यहीं से सारी दुनिया में छा जाते हैं। आज ही एक साहब से मुलाकात हुई, उनसे इतने तान्त्रिकों पर बातचीत हुई। उन्होंने बताया कौन-कौन उनके आश्रय में आये और कौन-कौन महात्मा बन गये। मुझे लगा ये अभियान अब शुरू हो गया। ये तान्त्रिकों को एक-एक करके ठीक करना जरूरी नहीं है। सबको एक साथ ही गंगाजी में धो डालना चाहिए। तभी इनकी तबियत ठीक होगी। आज यह महिषासुर सब दूर फैल गया है। इसको खत्म करने का ही अभियान शुरू होना चाहिए। ये एक बड़ी भारी आत्मिक क्रान्ति है जिससे सारे संसार का कल्याण होने वाला है। सारा संसार इस क्रान्ति से पुनीत हो जाएगा और आनन्द के सागर में परमात्मा के साम्राज्य में रहेगा। लेकिन उसके लिए सबको धीरज से कुछ न कुछ त्याग करना चाहिए और उसके लिए सबसे बड़ी चीज़ यह है कि हिम्मत रखनी चाहिए। हिम्मत से अगर काम लिया जाए तो कोई वह दिन दूर नहीं जब हमारा सारा संसार सुख से भरा हो जाएगा। किन्तु उसमें सबसे बड़ी अड़चन आती है। हमें जब तक कि सहजयोगी गहनता में उतरते नहीं, सहजयोगियों को चाहिए कि वे गहनता में उतरें। हर सहजयोगियों के लिए ये बड़ी जिम्मेदारी है कि उन्हें इस क्रान्ति में ऐसा कार्य करना चाहिए जो एक विशेष रूप धारण किए हो। अभी तक जो भी सहजयोगी मैं देखती हूँ उनमें यही बात होती है कि अभी हमारी यह पकड़ आ रही है, माँ, हमारे यह चक्र पकड़ रहे

हैं, हमारा यह हो रहा है, अभी हमारे अन्दर यह दोष है, ऐसा है, वैसा है। लेकिन जब आप देना शुरू करें। मगर हम जब दूसरों को देना शुरू करेंगे, जब दूसरों का उद्धार करना शुरू करेंगे तो अपने आप यह सब चीज़ें धीरे-धीरे कम होती जाएंगी। चित्त अपना इधर ही रहना चाहिए कि हमने कितनों को दिया। कितनों को हमने पार कराया। कितनों को हमने सहजयोग में लाया है। जब तक हम इसे जोर से नहीं कर सकते तब तक सहजयोग का कार्य आगे नहीं बढ़ पाएगा और ये बढ़ना अत्यंत आवश्यक है। उसके लिए और भी बातें करनी चाहिए। जो कि हम लोग सोच रहे हैं कि एक साल के अन्दर घटित हो जाए उसमें से एक बात ऐसे सोच रहे हैं कि इस तरह का एक कोई आश्रम बना लें जहाँ पर सहजयोगी अलग-अलग जगह से आकर रहेंगे और उनको सहजयोग के मार्ग से पूर्ण, पूर्णतया परिचित किया जाएगा। इतना ही नहीं लेकिन उनकी जो कुण्डलिनी है उसकी जागृति भी पूर्णतया हो जाएगी और वे एक बड़े, भारी महान योगी के रूप में हमारे संसार में कार्यान्वित होंगे। इसकी व्यवस्था सोच रहे हैं और मेरे विचार से साल भर के अन्दर कोई न कोई ऐसी चीज़ बन जाएगी जहाँ पर आप लोग कम से कम एक महीना आकर रह सकते हैं। और वहाँ रह कर आप सहजयोग में पारंगत हो जाएं और एक निष्णात प्रवीण सहजयोगी बनकर इस सारे संसार में आप कार्य कर सकते हैं।

पर सबसे पहले बड़ी बात यह है कि जो हमारे अन्दर एक तरह का अपने प्रति एक अविश्वास सा है जो डेफिडन्स है उससे हमें बाज़ आना चाहिए। हम आपसे बताते हैं यहाँ जो डॉ. वॉरेन है, ये जब सहजयोग में आए थे तो हमारे पास ज़्यादा से ज़्यादा एक-आठ दिन तक रहे। उसमें भी लड़ते झगड़ते रहे पूरे समय उनके पहले समझ में नहीं आ रहा था किस तरह अपने को ठीक करें फिलहाल जो भी हो उसके बाद वो ठीक हो गये और वापस वे ऑस्ट्रेलिया चले गए और ऑस्ट्रेलिया जाने के बाद उन्होंने इतने लोगों को पार कर दिया। इतने लोगों को ठिकाने लगा दिया कि मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ जिन्होंने गणपति भी क्या उसे जाना नहीं था। जिन्होंने किसी देवता को कभी जाना नहीं था। जिन्होंने कभी कुण्डलिनी के बारे में जाना नहीं था। वो आठ दिन के अन्दर इतने बढ़िया होकर और सारे ऑस्ट्रेलिया पर छा गये। तो यह सोचना कि हम इसे नहीं कर सकते हैं या कैसे करें? इसमें यह उलझन है लोग क्या समझेंगे इस तरह की आप अगर आपने विचार धारणा रखी तो सहजयोग बढ़ नहीं सकता। परमात्मा आपके साथ में है, शक्ति आपके साथ में है। स्वयं आप योगी है और सब योगियों के ऊपर ये जिम्मेदारी है इस कार्य को पूरी तरह से करें। जब तक आप संगठित रूप से नहीं रहेंगे तब तक यह कार्य नहीं हो सकता। संगठित होना पड़ेगा। संगठित होने का मतलब यह है कि, आप एक ही शरीर के अंग-प्रत्यंग है। एक सहजयोगी को दूसरे सहजयोगी से कभी भी विलग समझना नहीं चाहिए। जैसे कि मैं देखती हूँ कि शुरुआत में सहजयोगी जो इन्सान सहजयोगी नहीं है उसकी ओर ज़्यादा मुड़ता है बजाय इसके कि जो सहजयोगी है । तो पहली तो बात यह होनी चाहिए कि जो हमारे दूसरे भाई-बहन जो सहजयोगी हैं, उनके आगे बाकी सब पराये हैं। कोई कुछ भी बात कहें उनके साथ हमको किसी तरह से भी एकमत नहीं होना क्योंकि वो आपको चक्कर में डाल देंगे और आपके अन्दर फूट पड़ जाएगी। इस आसुरी विद्या से अगर बचना है तो आपको यह समझ लेना चाहिए कि आप योगी जन हैं और आप परमात्मा के साम्राज्य में हैं। हर आसुरी विद्या का एक-एक एजेंट है। समझ लीजिए वह आपको खींचना चाहता है कि आप इस विद्या से हट जाएं और उनके विद्या में आ जाएं। और उनकी चालाकियाँ इतनी सुन्दर हैं कि आपकी समझ में नहीं आएगी। इसलिए पहली चीज़ यह है कि हम सहजयोगी, सहजयोगी के विरोध में नहीं जाएंगे और कोई ग्रुप हम

न बनाये और कहीं ग्रुप जरा सा भी बनने लग जाता है सहजयोग का तो मैं उसको तोड़ देती हूँ और ऐसा तोड़ा है। अब जैसे ग्रुप बन गये, दिल्ली वाले हो गए, फिर दिल्ली में कोई हो गए तो कोई करोल बाग के हो गए। तो कोई कहीं के हो गए। तो कोई बम्बई के हो गए। तो बम्बई वाले तो उनमें भी कोई नागपाड़ा के हो गये, तो कोई दादर के हो गए, तो कोई कहां के हो गए। अब करते-करते फिर आप ऐसी छोटी जगह पर आप पहुँच जाएंगे जहाँ आप सिर्फ अकेले बैठे रहेंगे और आप कहेंगे कि सहजयोगी कहाँ गायब हो गए। तो इसमें से कोई भी चीज़ का ग्रुप नहीं होना चाहिए।

जब इन्सान में कैंसर सैट होता है तब वह ग्रुप बना के रहता है। एक आदमी में अगर 'डीएनए' जिसे कहते हैं एक आदमी में अगर खराब हो जाए, एक सेल में अगर खराबी आ जाए एक ही सेल में अगर खराबी आ जाए तो वह दूसरे सेल पर जोर करेगा और दूसरा सेल तीसरे सेल पर जोर करेगा और ऐसा उनका एक गुट बनता जाएगा। वह चाहेगा हमारा जो एक ग्रुप है वह सब पर हावी हो जाए। जब वह सब पर हावी होने लगता है जैसे कि आप समझ लीजिए कि आपके नाक का सेल है वो अगर बढ़ने लगा तो उन्होंने एक ग्रुप बना लिया तो एक बड़ा सा यहाँ पर लम्पसा हो गया और उसने जाकर के आक्रमण किया आँख के ऊपर, फिर आँख को ढक लिया और वहाँ से गए कान को ढक लिया। इस तरह से कैंसर जो होता है वह अपनी अपेक्षा दूसरों को नीचे समझता है। और एक ग्रुप बनाकर के उनके जो दूसरे लोग हैं जो कि सहजयोगी हैं उनको दबाता है। ऐसी बीमारी अगर सहजयोग में अगर फैल जाए तो उसका ठिकाना मैं खूब लगाती हूँ। चाहे मैं कहीं भी हूँ, मैं चाहे लंदन में रहूँ चाहे मैं अमेरिका में रहूँ चाहे कहीं भी रहूँ उसका ठिकाना अपने आप हो जाता है। इसलिए किसी को भी कोई ग्रुपबाज़ी नहीं करनी चाहिए। किसी को भी यह नहीं सोचना चाहिए हम एक ग्रुप के हैं। अगर दस आदमी एक साथ रहते हैं और बार-बार एक ही साथ दस आदमी रहते हैं तो समझ लेना चाहिए कि ग्रुप बन रहा है। सहजयोगियों को कभी भी एक साथ दस आदमी हर समय नहीं रहना चाहिए। जब आज इनके साथ बैठे तो कल उनके साथ, तो कल इनके साथ। जैसे कि हमारे अन्दर रक्त की छोटी-छोटी पेशियाँ हैं जिनको हम सेल्स कहते हैं। वो अगर समझ लीजिए कि एक जगह बैठ गये तो दस सेल्स ने यह सोचा कि हम यहीं बैठ जाए तो उस आदमी की मृत्यु हो जाएगी। सहजयोग की मृत्यु हो जाएगी। इसलिए हम दस आदमी एक साथ क्योंकि हम एक ग्रुप के हैं, ये एक ग्रुप के हैं, वे एक ग्रुप के हैं, रक्ताभिसरण जिसे कहते हैं कि ब्लड का जो सर्क्युलेशन है वह हमारे अन्दर खुले आम से होना चाहिए, तो कोई सा भी ग्रुप नहीं बनना चाहिए। जहाँ ग्रुप आपने देखा बन रहा है उस ग्रुप को छोड़कर दूसरे ग्रुप में चले जाए। उस ग्रुप को तोड़िए। उसे कहना इस ग्रुप के साथ आ जाए और वह उस ग्रुप के साथ आ जाएगा। इस तरह से आप जब तक नहीं करेंगे तब तक आपकी कलेक्टिविटी में निगेटिविटी बनती जाएगी। जैसे कि मैं कहती हूँ कि आपने अगर मंथन करके मखखन निकाला। मखखन के कण चारों तरफ हैं मगर उसमें बड़ा सा एक मखखन का ढ़ेला ड़ालना पड़ता है फिर उसके आस-पास सारे जो कण हैं वो जुड़ते जाते हैं। मगर चार, पाँच, छः कण मिलकर अलग से अगर बैठ जाएं तो जिसने मथा है वह कहता है जाने दीजिए। बेकार ही है, यह मखखन बेकार ही है। इसे छोड़ दीजिए। जो बड़ा है उसे उठा लीजिए। तो सबको मिल-मिल करके एक बड़ा सा मखखन के ठेला स्वरूप बनना है। इसी तरह से आपको भी एक बड़ा सा ग्रुप बनना चाहिए। करते-करते फिर एक बड़े सागर में विलीन होना चाहिए। तो एक बूँद को अगर आपको सागर में विलीन करना है तो आप चार-पाँच बूँद बना के सिर्फ बबुला आप जानते हैं कि दो

मिनट के लिए आते हैं और नष्ट हो जाते हैं। अपने आप ही प्रकृति से ही होते हैं। उसको कोई कुछ करने की जरूरत नहीं है। इसलिए कोई सा भी ग्रुप आपको बनाना नहीं है। सबके साथ एक जैसा मिलना-जुलना, सबको एक साथ जाना। सबसे एक साथ प्रेम रखना और सबको एक साथ समझने की कोशिश करनी है। एक दूसरों को किसी भी तरीके से क्रिटीसाइज़ (निंदा) कभी नहीं करना चाहिए। आप आपस में भाई-बहन नहीं हैं लेकिन आप मेरे शरीर के अंग-प्रत्यंग हैं। अगर समझ लीजिए मेरी एक अंगुली ने दुसरी अंगुली को क्रिटीसाइज़ कर दिया तो क्या फायदा होगा? इससे तो नुकसान ही होने वाला है। इसलिए ठीक यही है कि मनुष्य को, इसलिए बहुत उचित बात है कि, हम लोगों को यह सोचना चाहिए कि अब हम मनुष्य नहीं हैं। हम अति मानव हैं और अति मानव की जो स्थिति है उसमें हमें सब दूर घूम-फिर कर के अपना चित्त परमात्मा पर रखना चाहिए। यह बड़ी भारी एक कठिनाई आ जाती है सहजयोग में। शुरुआत में कलेक्टिविटी, पता नहीं आदमी क्यों तोड़ देता है। यह भी एक आसुरी विद्या है। जहाँ कलेक्टिविटी टूट जाती है। अब जैसे हम कहे कि बम्बई में यह काम कम है। पर दिल्ली में अभी नहीं मगर कलकत्ता में मुझे मालूम नहीं हाल। लेकिन मैं यही कहूँगी कि ये बीमारियाँ फैलने मत दीजिए। आप सब लोग मेरे बेटे हैं और मेरी बेटियाँ हैं। आपस में कोई सा भी अगर आपमें मतभेद हो जाए तो उसमें कोई ऐसी बात नहीं लेकिन यह है कि आपस में आप कोई ग्रुपबाज़ी मत कीजिए। फिर एक ग्रुप बन गया फिर वह ग्रुप वाले कहेंगे हमारे आदमी को आप सामने कीजिए। वह ग्रुप कहेगा हमारे आदमी को सामने कीजिए और फिर दूसरा ग्रुप कहेगा हमारे आदमी को सामने कीजिए और उसका फिर असर क्या होगा? आप देखते हैं कि ऐसे लोग सहजयोग से पराङ्मुख हो जाते हैं, हट जाते हैं। उनका स्थान खत्म हो जाता है। जैसे गुरुओं को खत्म किया है। वैसे इस तरह के लोगों को भी खत्म किया जाता है। तो मैं नहीं करूँ तो आपकी प्रकृति ही कर देती है। इसलिए आपको खास करके मुझे कहना है कि, कृपया आप लोग अपनी ओर चित्त दें और दूसरों की ओर प्रेम दें। दूसरों को प्रेम दीजिए और अपनी ओर चित्त रखें। अपनी ओर देखें। अपनी ओर देखिए और कहिए कि हम कैसे हैं? क्या हम ठीक हैं? क्या हमारे चक्र ठीक हैं? क्या हम में कोई दोष है? अगर आप सोचते हैं कि कोई समझता है तो उससे जाकर पूछिए कि, अगर कोई चक्र पकड़ रहा है तो बता दीजिए, हमारे समझ में नहीं आ रहा। जिस दिन आप इस चीज़ को अपना लेंगे कि हम माँ के अंग-प्रत्यंग में बैठे हैं आप समझ जाएंगे कि आपका कितना महत्त्व है। आप चाहे जैसे भी हैं हमने आपको स्वीकार कर लिया है। अब आपको भी हमें स्वीकार करना होगा और जानना होगा कि अब अत्यंत शुद्ध और पवित्र भाव से रहने से ही हमारी माँ को सुख और आनन्द मिल सकता है।

आज की एक विशेष तिथि है, इस तिथि पर अभियान शुरू हो रहा है कि सारी दुनिया के जितने भी तांत्रिक हैं उनके पीछे मैं अब लगने वाली हूँ। और मैं चाहती हूँ कि आप भी सबके पीछे हाथ धो कर लगे। और जहाँ भी कोई तांत्रिक दिखाई दें तो उसके पास जाने वाले लोगों के लिए कुछ आप चाहे तो उसके लिए हैण्ड बिल्स वगैरे छपवा कर वहाँ पर भेज दीजिए कि ये तांत्रिक हैं और आप तांत्रिक से भाग निकले। जो आदमी तांत्रिक के पास जाता है, उसके घर अगर तांत्रिक आ जाए तो सात पुशतों तक वह पनप नहीं सकता। उसके बच्चे नहीं पनप सकते। सात पुशतों तक उसके यहाँ हालत खराब होगी। बड़े बड़े नुकसान होंगे। उसका घर जल जाएगा और हो सकता है उसकी बीबी कहीं आत्महत्या कर ले, उसके घर में हमेशा तकलीफें, दुःख और परेशानी बनी रहेगी। इसलिए यह जो अभियान है इसका आज दिन ऐसा है कि सब लोग मज़ाक में अप्रैल फूल का दिन कहते हैं। तो इनको बेवकूफ

बना-बना कर ही पटका जाएगा। उनको बेवकूफ बनाकर ही पटका जाएगा क्योंकि ये अपने को बहुत अकलमन्द समझते हैं। तो इनकी जो बेवकूफियाँ हैं उनको उनका पूर्णतया उद्घाटन करना आप लोगों का कार्य है। आप सबके प्यार और दुलार और इस शोभा से वाकई मैं अभिभूत हूँ। इतना आप लोगों ने खर्च किया, इतनी शोभा बढ़ाई है, सो यही कहना है कि बहुत ज़्यादा खर्चा करने की जरूरत नहीं है। आपकी माँ तो इतनी सीधी-साधी है। उसको कोई भी चीज़ की जरूरत नहीं। आप लोग जो भी हैं, जो कुछ भी हमें दे दें। वही बहुत हैं। हमें तो कुछ चाहिए भी नहीं। जो कुछ हमसे लेना है वह आप लोग ले लीजिए लेकिन अब आप लोगों के सन्तोष के लिए हम कहते हैं कि, 'अच्छा भाई, अगर आप लोगों को साड़ी देना है तो दे दें। अब क्या करें?' लेकिन वो भी क्या है चार साल पहले दी हुई साड़ियाँ अब भी ताले-चाबी में बन्द हैं वो तो हमारी समझ में आता है कि बाद में अगर कोई म्युझियम वगैरे कुछ बनेगा तो उसमें आप लोग लगा दीजिएगा। तो यह सब चीज़ें आपके शौक के लिए जो भी आप कहें मेरे पास धरोहर रखी हुई हैं और इसकी कोई जरूरत नहीं पर आपका प्रेम ऐसा है कि उसके आगे मैं कुछ बोल भी नहीं सकती और कुछ कह भी नहीं सकती। जो भी कुछ प्रेम से दीजिएगा चाहे वो शबरी के बेर हो और चाहे आप लोगों की कीमती साड़ियाँ हो सब मेरे लिए मान्य है।

तो अब हम लोगों का पूजा का समय हो गया है। आज जैसे मैंने कहा था जन्मदिवस की बात है बराबर बारह बजे मैंने मेरा भाषण शुरू किया और बराबर बारह बजे मेरा जन्म हुआ था इसलिए इतना समय लग गया फूलों में समय लग गया इसमें कोई घबराने की बात नहीं क्योंकि संजोग ऐसा है। बारह ही बजे आज का जन्म दिन मनाने का था। तो इस में सब चीज़ अपने समय पर ठीक-ठाक बैठती है। तो इसमें किसी को भी दोष नहीं मानना नहीं चाहिए।

ENGLISH TRANSLATION

(Hindi Talk)

Since 21st March, you all are celebrating My birthday... and, in Bombay too, birthday was celebrated for 4 days with full vigor... after that birthday was celebrated in Delhi, and today too, it feels that, you all will keep celebrating My birthday.

This tent has been decorated so beautifully... with flowers... and with different colors... all decoration has been done so much, that words stop, seeing the artists, that, how, with their heart, they have made such a talent-ful thing, in so little time.

Today, the special thing is such that, mostly, in these days, when, Easter happens, I am in London... and every Easter Puja happens in London only. So they sent news that Mother, wherever You are, wherever Your puja happens, remember us there, and here we will do the Easter Puja that day. Arrangement of the Puja today happened so quickly... and with so much beauty... all this is immense blessing of God, that He, made such arrangement happen. But, here, a very big work is starting from today. Till now, I used to talk a lot about false gurus, and very openly I told about them, that how much they are wicked, how much they are demonic, and how they stop the path of true seekers, and put them in misunderstanding, and put them on a totally reverse path... and for this, many people said that it is not good to talk about such a thing... by this, the gurus will attack You, and will trouble You, but, the totally opposite happened. No one showed Me the court, neither anyone told anything about Me. One by one, every wicked person came in open, and the world knew that whatever I told about them is absolutely true. Today, slowly these false gurus are getting wiped out, but, the tantriks still have a strong hold... and in your Calcutta, I think, its main source is there. Here they thrive, and from here they spread to the whole of the world. Today only, the person who I met with, talked with him so much tantriks.. he told who all came to his shelter, and who all became mahatma. I felt, this campaign has now started... it is not necessary to correct these tantriks one by one... they should all be washed into "Ganga Ji" together. Then only they will understand. So, from today, this Mahishasur which has spread everywhere, the campaign to end this, should begin.[clapping]

This is one very big spiritual revolution, by which the whole world will be benefited. The whole world will become pure with this revolution, and will remain in the ocean of joy, in the Kingdom of God. But for that, with patience, everyone should do some sacrifice, and for that, the biggest thing is that, strength should be kept. If we work with strength, then that day is not far, when our world will be filled with happiness. But, in that, the biggest hurdle comes to Me, when sahaja yogis do not go deep. It should be for sahaja yogis, to go very deep. It is a big responsibility for every sahaja yogi, that they should do such work in this revolution, which should be very special. Till now, whoever sahaja yogi I see, they have this thing that, we are having this catch Mother... our these chakras are catching... this is happening with us... we have this mistake within us... this and that. But, when we start giving... when you start giving to others, start their welfare, then by itself, these things will start diminishing. Your attention should only be here, that to how many we have given, how many we helped cross over, how many we have bought in Sahaja Yoga. Until we do not do this with much force, the work of Sahaja Yoga will not go forward. And this moving forward is utmost important.. for this many other things should be done, which we are thinking, should happen within a year. From that one thing we are thinking such that... we create such an ashram, where sahaja yogis will come and live from different places, and the whole path of Sahaja Yoga will be made known to them. Not only that, the awakening of their Kundalini will be done fully, and they will be activated in the whole world in the form of very great sahaja yogis. We are thinking of this arrangement, and I think within a year, some or the other such thing will be made, where you can come and stay at least for a month, and by staying there, you become master in Sahaja Yoga, and by becoming a master sahaja yogi, you can work in the whole

world.

But, the biggest thing is that, within ourselves, we have a kind of, lack of faith about ourself... the diffidence that we have, we should overcome that. I will tell you, one Dr. Warren is here, when he came to Sahaja Yoga, he lived with us for, at the most 8 days, and in that too, he kept fighting the whole time... he could not understand initially how to correct himself. Anyways, whatever happened, when he became alright, he went back to Australia, and after going to Australia, he helped so many people cross over, put to good so many people, that I was very surprised that he, who did not know what was Ganpati, who did not know about any devta, who did not know anything about Kundalini... became alright within 8 days, and spread all over Australia. So, to think, that we cannot do this... or how to do this... this problem is there... what will people think... if you keep such mentality, then Sahaja Yoga cannot move forward. God is with you, Shakti is with you, you are yogi yourself, and it is a responsibility on all yogis to do this work fully. Till you all don't stay united, this work cannot happen. Have to be united, and to be united means, you are part and parcel of one body. One sahaja yogi should never be thought of as different from another sahaja yogi. Like I see, in the beginning, a sahaja yogi, turns more towards a person who is not a sahaja yogi, rather than one who is a sahaja yogi. So, first thing should be there that, those brothers and sisters who are sahaja yogis, in front of them, everyone else is not related to you. Whatever one says, we, under any circumstance, should not agree with them, because they will put you in a fix, and there will be a divide between you people. If you have to avoid this demonic knowledge, then you will have to understand that you are yogi people, and you are in the Kingdom of God. Every demonic knowledge has one-one agent, understand, who wants to pull you, so that you leave this knowledge, and go to their knowledge... and their clever tricks are so beautiful, that you won't understand. So, the first thing is that.. rule... that we sahaja yogis do not go against sahaja yogis... and we don't form a group. If somewhere, even a little group starts to form of Sahaja Yoga, I break that... and have broken. Now like... groups are made, like Delhi people are there... then they are in Delhi, then... like, Karolbag people are there, then of somewhere else are there... Bombay people are there. Then Bombay people... in them too, some are of Nagpada, then some of Dadar, and some of somewhere. Now, doing all this, you will reach such a small place, where you will be sitting alone, and say where have the sahaja yogis disappeared.

So, in this, not a thing can make a group. When cancer sets within a person... then it happens by making a group. If in a person.. DNA which you call... if it becomes bad in a person... if in a cell mistake happens... if only a single cell becomes bad, it will force on another cell, and that second cell will do on third cell, and such a group of their will begin to form... and that will want that our group should overpower everyone. When that starts to overpower everyone, then for example, suppose cells of your nose are there, if they start to grow, then they form a group, and a big lump forms here, and that goes and attacks on your eye, and covers the eye. Then from there it goes, and covers the ear. Like this, one who is cancer understands others lower compared to himself, and forms a group and pushes those, who are the others... who are sahaja yogis. If such a disease spreads in Sahaja Yoga, then I put it away for good nicely, wherever I am. Whether am in London, whether am in America, whether am anywhere... that is put away for good automatically. Therefore, no one should do any kind of groupism. No one should think that we are of one group. If 10 people stay together, and if everytime 10 people stay together, then we should understand, a group is being formed. For sahaja yogis, 10 people should not stay together all the time. When today you sit with them, then tomorrow with them... tomorrow with them... then with them. Like we have in ourselves, small-small cells of blood... which we call cells... suppose if they sit at one place, and 10 cells think that we will sit here only, then that person will die... Sahaja Yoga will die. That's why, us 10 people together, because we are of one group, these are of one group.. those are of one group... "rakta-visaran" which we say, that, which is the circulation of blood, should flow freely within us. So, no group should be formed. Where you see a group is forming, leave that group, and go to another group. Break that group, tell that to come with this group, then that should come with this... till you do not do this way, negativity will keep forming within your collectivity.

Like I say, if you churned and took out butter... butter particles are all around... in that you have to put a big lump of butter, then after that, then around it, all the particles start to stick to it. But, if 4-5-6 particles get together, and sit aside, then the one who has churned, says that, let them go, this butter is bad.. pick up the one that is bigger. So, everyone should get together, and big one... like butter, like that, should become a big group... and doing like this, should dissolve into one big ocean. So, if one drop you have to dissolve in the ocean... then, by creating 4-5 drops, you will only make bubbles. Whoever works by this method, forms a bubble, and those bubbles you know, come for 2 minutes, and then get destroyed... by themselves, by nature itself, nothing has to be done to it. That's why, you don't have to create any group. Should meet everyone the same way, should go with everyone, should love everyone, and should try to understand everyone. You should not criticize each other, in any way, ever. You are not brothers and sisters with each other, but you are the part and parcel of My body. Suppose if one finger of Mine, criticizes the other finger, then what good will happen... only loss will happen by this. That's why, right is that, man should... what happened, sit down at least(to someone)... that's why, most right is this thing, that we should think that now we are not human, we are super human, and the condition of super human is such that, we should roam everywhere, and keep attention towards God. This one big problem comes in Sahaja Yoga, in the beginning, when a person, don't know why, breaks the collectivity. This is also one demonic knowledge, where collectivity breaks. Now, like I say, in Bombay this work is less, in Delhi, not yet even now... and I don't know the situation about Calcutta yet, but I will say that do not let diseases spread. You all are my sons, and my daughters. Within yourselves, if any kind of difference happens, then its not a big thing, but that, you should not do groupism with each other. If one group forms, then that group will say, that put forward our man... that will say, put forward our man... and the effect of that you see, is that such people go away from Sahaja Yoga.. their place ends. Like gurus have been finished, in the same way, such people are finished... if I don't do, your own nature will do it.

That's why, to you, specially I have to say it, that please, you all give attention to yourself, and also love towards others. Give love to others, and put attention on yourself. Look towards yourself, and see yourself, and say, how are we. Are we alright? Are our chakras alright? Do we have any mistakes within us, or if you think that someone understands, then go and ask him... "if a chakra is catching then please tell, as we can't understand".

The day you accept the thing, that we are sitting as part and parcel of Mother, you will understand how much importance you have. No matter how you are, I have accepted you. Now you also have to accept Me, and have to know that, by living with feeling of immense cleanliness and purity only, your Mother can get happiness and joy.

Today is this special date, the date on which the new campaign is starting, that, whatever tantriks are there in this whole world, I am going to get after them now, and I wish... [clapping]... and I wish that all of you also, should be after everyone... and wherever you see a tantrik... for people who go to him, if you wish, for that, print pamphlets etc, and send there, that this man is a tantrik, and keep running from tantrik. Because, a person who goes to a tantrik, and tantrik comes to his house, then he cannot prosper for seven generations... his children won't prosper... seven generations will suffer of his. Big losses will take place... his home will burn.. and it may happen, that his wife may commit suicide somewhere... his home will always have problems, sadness, and despair.

That's why this campaign... today's day is such that it is called April Fool's day jokingly. So, these people will be made fools and thrown over. These people will be fooled, and thrown over, because they think themselves to be very intelligent. So, their foolishness which is there... their full inauguration, is the work of you people.

With your love, and affection, and with this decoration, really... I am overwhelmed. So much you have spent, so much you have decorated... only have to say, it's not necessary to spend so much. Your Mother is so simple, that She does not need anything. You all... whatever is there, whatever you

give to Me, is enough... I do not want anything. Whatever you have to take from Me, you all take it. But, for your satisfaction, I say, OK, you have to give a saree, then give, what to do. But, that too, you think that, sarees given 4 years back are still locked in lock and key. That I do not understand, that later when some museum etc is built, then you will put there. So, all these things, for your interest, whatever you say, are kept with me as your deposit, and its not necessary, but your love is such that, in front of that I cannot speak anything, cannot say anything... whatever you give with love.. whether they are fruits of Shabri... or whether they are expensive sarees of yours, all matter to me.

So now, it is the time for our puja... today like I said, it's the occasion of birthday, and exactly at 12 o' clock, I started my lecture, and exactly at 12 o' clock, I was born. That's why, so much time was spent, so much time was spent in flowers, it's nothing to worry about, because the opportune time is such that, at 12 o' clock only, today's birthday was to be celebrated. So, in this... [clapping]... all things, all at their own time, set properly... in that no one should feel any guilt.